बिल्ली हाउसबोट पर
अनिता देसाई

अनिता देसाई

हिन्दी अनुवाद
विमला मोहन

रेखांकन
गीना वडेरा

साहित्य अकादेमी

Billi Houseboat Par: Hindi translation by Vimala Mohan of Anita Desai's children book in English *A Cat on the Houseboat*. Sahitya Akademi, New Delhi (2012) ₹25

प्रथम संस्करणः 1993
पुनर्मुद्रणः 1995, 1996, 1998, 1999, 2003, 2008, 2011 एवं 2012

साहित्य अकादेमी
मुख्य कार्यालय : रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110 001
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मंदिर मार्ग, नई दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय
172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुंबई 400 014
सेंट्रल कॉलेज परिसर, डॉ. बी. आर. आंबेडकर वीथी, बेंगळूरु 560 001
4 डी. एल. खान मार्ग, कोलकाता 700 025

चेन्नई कार्यालय
मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग्स (द्वितीय तल), 443(304), अन्नासालइ, तेनामपेट, चेन्नई 600 018

ISBN: 81-7201-492-9
मूल्यः पचीस रूपए

Website: http://www.sahitya-akademi.gov.in
E-mail: sahityaakademisale@yahoo.com

मुद्रकः स्वास्तिक ऑफ़सेट, नवीन शाहदरा, दिल्ली।

बच्चो, अगर तुम उस बिल्ली से मिलते तो इतना ज़रूर सोचते कि उसमें सचमुच कोई अनोखी बात थी ; और यह बात थी कि उसका नाम 'पपाया' यानी पपीता क्यों है ? पपीता पीले या नारंगी रंग का बड़ा-सा फल होता है। उसके बीज काले होते हैं, और उसकी ख़ुशबू बड़ी प्यारी होती है। पपीता काटकर अगर उस पर नींबू और चीनी छिड़क दी जाये तो खाने में वह और भी मज़ेदार लगता है। यह चौड़ी पत्तियोंवाले छाते के-से आकार के छोटे-छोटे पेड़ों पर फलता है और गर्मियों में पकता है। अब सुनहरी आँखों, सफ़ेद पंजों और सफ़ेद मूँछों, सफ़ेद और सलेटी रंग की उस धारीदार बिल्ली को 'पपाया' नाम देना बड़ी ही अनोखी बात थी। लेकिन इस अनोखी बात की तरह यह बात भी बड़ी अजीब थी कि इस बिल्ली को सचमुच पपीता बहुत पसन्द था।

हुआ यह कि जब वह बिल्ली बहुत छोटी थी, तो एक दिन खाने की मेज़ पर,

एक चीनी कटोरे में रखा पपीता उसने सूँघ लिया। फिर क्या था, वह कूदकर मेज़ पर चढ़ गयी। उसने उस ख़ुशबूदार गोल-गोल अजीब फल को चखने की बात मन में ठान ली। किसी चीज़ को लेने से पहले पूछने का तरीक़ा तो अभी उस बिल्ली को आता नहीं था। इससे पहले कि नीरा और नरेन को बिल्ली की करतूत का पता चलता, उसने मेज़ पर चढ़कर आधे से अधिक पपीता चट कर डाला। उन दोनों बच्चों की वह पालतू बिल्ली थी। बिल्ली को इस तरह फल खाते देखकर दोनों बच्चों को बहुत आश्चर्य हुआ ; और सबसे ज़्यादा हैरानी तो उन्हें तब हुई, जब उन्होंने उस बिल्ली को पेड़ पर चढ़कर गुच्छों में फले पपीतों पर मुँह मारते देखा।

''चलो, इसका नाम 'पपाया' ही रख दें''—नरेन ने कहा, ''इसके लिए यह नाम पूसी से ज़्यादा अच्छा है।''

''लेकिन बिल्ली के लिए यह नाम बेवकूफ़ी भरा लगता है।'' नीरा ने जवाब दिया।

''बिल्ली का यह नाम बेवकूफ़ों-जैसा तो नहीं है। हाँ, कुछ अजीब ज़रूर है।'' नरेन ने कहा। जो भी हो, उन दोनों ने उसका नाम पपाया ही रख दिया।

उस बिल्ली की सिर्फ़ यही बात अजीब नहीं थी। आनेवाली गर्मियों में बच्चों को पपाया की दूसरी ख़ासियत का भी पता चला। वह बात यह कि उसे सफ़र करना भी बहुत अच्छा लगता था। वह बहुत ही अच्छी सफ़र करनेवाली बिल्ली थी। नीरा और नरेन के पिता तो उसे घुमक्कड़ कहकर ही पुकारने लगे थे।

गर्मियों की उन छुट्टियों में उन्हें कश्मीर जाना था।

''पपाया को कहाँ छोड़ जायें ?'' अम्मा ने पूछा।

''उसकी देखभाल हरि कर लेगा,'' नरेन ने कहा। हरि उनका खाना बनानेवाला नौकर था।

''नहीं, वह तो छुट्टी लेकर अपने गाँव जा रहा है,'' माँ ने बताया।

''फिर तो घर में पपाया की देख-रेख करनेवाला कोई भी नहीं होगा।''

''ओह ! पपाया हम क्या करें ?'' नीरा ने पपाया को गोदी में उठाकर प्यार करते हुए दुख से कहा।

''गर्मियों की छुट्टी में मैं इसे राम को सौंप दूँ।''

''नहीं'', नीरा ने गुस्से से कहा, ''पपाया राम से नफ़रत करती है। राम हमेशा

अपना माउथ आर्गन बजाता रहता है। पपाया को यह बिल्कुल अच्छा नहीं लगता और राम के पास एक कुत्ता भी तो है।''

''तब, हम क्या करें ?''

किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

आख़िरकार, माँ ने कहा, ''लगता है, हमें इसे साथ ही ले जाना पड़ेगा।''

नीरा और नरेन भी यही चाहते थे। वे ख़ुशी से उछल पड़े। एक ने दौड़कर 'पपाया' को प्यार से उठा लिया और दूसरा जाकर माँ के सीने से लग गया।

लेकिन उनके पिता ने कहा—''नहीं, हम यह नहीं कर सकते। हवाई जहाज़ में इसे हम कैसे ले जा सकते हैं ? हम लोग, डल झील पर एक हाउस बोट में रहेंगे। बिल्लियों को तो पानी अच्छा नहीं लगता। वे पानी से डरती भी हैं।''

''किन्तु हमें इसको ले जाना ही पड़ेगा।'' माँ ने कहा, ''हमारे पास दूसरा कोई उपाय भी तो नहीं।''

इस प्रकार उस गर्मी में हाउस बोट में रहने के लिए 'पपाया' भी कश्मीर रवाना हो गयी।

बेचारी पपाया ! सफ़र में न केवल उसने बन्द टोकरी का अँधेरा देखा, बल्कि वह हवा में उछली भी, उसे धक्का भी लगा और वह टोकरी में लुढ़कती भी रही। हवाई अड्डे की अजीब-अजीब ख़ुशबू भी उसने सूँघी। उसने हवाई जहाज़ की डरावनी आवाज़ें सुनीं। हवाई जहाज़ में ऊपर, बहुत ऊपर उड़ान भरने का अनुभव किया, और फिर नीचे, बहुत नीचे गिरने का भी। इससे उसका जी मिचलाने लगा और उसके पेट में मरोड़-सी उठने लगी। उसके कानों में लगातार ज़ोर-ज़ोर की आवाज़ें आतीं रहीं।

पपाया ने टोकरी को खूब खरोंचा और चिल्लायी भी, लेकिन नीरा और नरेन ने उसे बाहर नहीं निकलने दिया। पपाया ने उनकी कठोर धमकी भी सुनी :

''नहीं, इसे बाहर मत निकलने दो। यह भाग जायेगी।''

वह ऐसा तो नहीं करती। वह तो केवल देखना चाहती थी कि बाहर क्या हो रहा है, लेकिन बच्चों को उसका यक़ीन नहीं था। पपाया को बहुत ही दुःख हुआ और उसके दिल को चोट पहुँची। आख़िर हारकर वह टोकरी तले दुबककर बैठ गयी। फिर उसने लम्बी साँस ली और सो गयी।

कुछ देर बाद वह झटके से जगी। वैसे झटका हल्का-सा ही था। उसे लगा वह अब सख़्त जगह पर नहीं, बल्कि मुलायम ज़मीन पर उतारी जा रही है। उसे चारों तरफ़ हलचल-सी महसूस हुई। एक अच्छा, सुहावना सरसराता ठण्डी हवा का झोंका-सा महसूस हुआ। वह टोकरी में मूँछ तानकर उठी और बैठ गयी। उसने सुना कि नीरा और नरेन ख़ुशी से चिल्ला रहे हैं।

''देखो, देखो उन छोटी-छोटी नावों को देखो, जिनमें पर्दे और गद्दे लगे हैं।''

''वे शिकारे हैं। पानी में चलनेवाली छोटी टैक्सी।''

''एक तो फूलों से भरी जा रही है।''

''एक सब्ज़ी से भरी।''

''और हमारी हाउसबोट कौन-सी है?''

''देखो और पहचानने की कोशिश करो। अपनी 'स्टार ऑफ कश्मीर' है—कश्मीर का तारा।''

''वह गुलाबी पर्दोंवाली ? फूलों के गमलोंवाली।''

''माँ, पानी की लिली को देखो। क्या तुमने कभी इतनी बड़ी-बड़ी लिली देखी है ?''

पपाया को बहुत देर नहीं रुकना पड़ा। आख़िरी बार उसकी टोकरी उठायी गयी और धीरे-से नीचे रख दी गयी। उसे लगा कि उसकी टोकरी की रस्सी कोई काट रहा है। जब वह खोल दी गयी तो गुस्से से गुर्राती हुई बाहर आ गयी।

''पपाया, तुम ठीक हो न ?'' नीरा चिल्लायी। उसने उसे उठा लिया और ज़ोर से दबोच लिया।

''उसे नीचे उतार दो, वह चारों तरफ़ देखना चाहती है,'' माँ ने कहा।

पपाया को नीचे फर्श पर छोड़ दिया गया। उसने देखा कि वह लकड़ी के बने एक सुन्दर घर में आ गयी है। घर की खिड़कियों में लगे गुलाबी पर्दे हवा में लहरा रहे थे। बाहर विलो पेड़ (जिसे यहाँ के लोग मजनू कहते हैं) के पत्ते झूम रहे थे। छज्जे पर दरवाज़े के सामने फूलों के गमले रखे थे। ज़मीन पर क़ालीन बिछी थी। कमरा गद्दीदार सोफ़े, कैलेन्डर, फूलदान और लकड़ी से बनी चीज़ों और पत्रिकाओं से भरा और सजा था। बहुत ही ख़ूबसूरत और आरामदायक।

पपाया ने अपने चारों तरफ़ देखा और अपने होंठ चाटने शुरू कर दिये। 'यह सब फ़साद किसलिए ?' उसने आश्चर्य से मन-ही-मन सोचा।

सबके पीछे-पीछे पपाया दूसरे कमरे में गयी। वह कमरा खाने की ख़ुशबू से भरा हुआ था। उसका ध्यान नये नौकरों की तरफ़ भी गया, जो मेज़ पर बड़ी-बड़ी प्लेटें लगा रहे थे। यह दूसरा कमरा सुन्दर था, जहाँ फल और मेवे से भरे कटोरे रखे थे। इस कमरे की खिड़कियों पर हरे परदे लटक रहे थे। पपाया भूख के मारे म्याऊँ-म्याऊँ करती हुई नीरा के पैरों में तब तक चिपटी रही, जब तक कि उसे चीनी की एक प्लेट में रसेदार गोश्त के साथ बहुत बड़ा डबलरोटी का टुकड़ा नहीं मिल गया। घर में तो उसे एक टीन की तश्तरी में खाना मिलता था। घर पर मिलनेवाले रोज़ के उबले हुए गोश्त तथा कटी हुई मछली से यहाँ मिले रसेदार गोश्त और डबलरोटी कहीं अधिक मज़ेदार थे। वह उन्हें एकदम चट कर गयी। पपाया ने इस बात की कोई चिन्ता नहीं की कि उसकी मूँछ पर गोश्त का रसा छिटककर लग गया है। लेकिन नीरा को उसे ऐसी हालत में देखकर हँसी आ गयी। बाक़ी सब लोग तो अपना खाना धीरे-धीरे ही खा रहे थे।

लेकिन पपाया उन सबके लिए रुक नहीं सकती थी, क्योंकि वह बाहर, बाग़ में जाकर एक कोने में ज़मीन खोदना चाहती थी। वह खाना खाने के बाद कूदकर खिड़की पर चढ़ ग़यी थी। वहाँ वह ठण्ड से अकड़ गयी; और वहाँ का नज़ारा देखकर तो वह एकदम हैरान रह गयी। उसके रोंगटे खड़े हो गये। उसकी आँखें खुलकर बड़ी-बड़ी और अधिक काली हो गयीं।

उस घर के चारों तरफ पानी-ही-पानी था और कुछ भी नहीं। गहरी हरियाली में ठण्डे पानी की लहरें चादर की तरह उछलती थीं और वे हिलोरें मारती हुई सारे वातावरण को सुन्दर बना रही थीं। पपाया जिस-जिस खिड़की पर बैठी, उसके नीचे पानी-ही-पानी था। उसे पूरा यक़ीन हो गया कि वह पानी में गिरकर डूब जायेगी।

पपाया वहाँ से चीख़कर कूद पड़ी और कमरे के दूसरे कोने में भाग गयी। उसने घिसटने की कोशिश की और अलमारी के पीछेवाले अँधेरे कोने में दुबकना चाहा। तब उसे लगा कि सब उस पर हँस रहे हैं, हँसते चले जा रहे हैं। जैसे कि सबने उसे गहरे पानी के भँवर में फँसा दिया हो और उसे ठगा हो ?

नीरा की माँ जब वहाँ से उसे पुचकारकर बाहर निकालने के लिये आयी, तो वह उन पर गुर्रायी और ग़ुस्से में उनका हाथ काट लिया। माँ ने फिर भी उसे गोदी में उठा कर प्यार कर लिया। उन्होंने कहा—''पपाया, मैं जानती हूँ कि तुम्हें क्या चाहिये। तुम कुरेदने के लिये कच्ची मिट्टी चाहती हो। है न ! आओ मैं तुम्हें रास्ता दिखाती हूँ।''
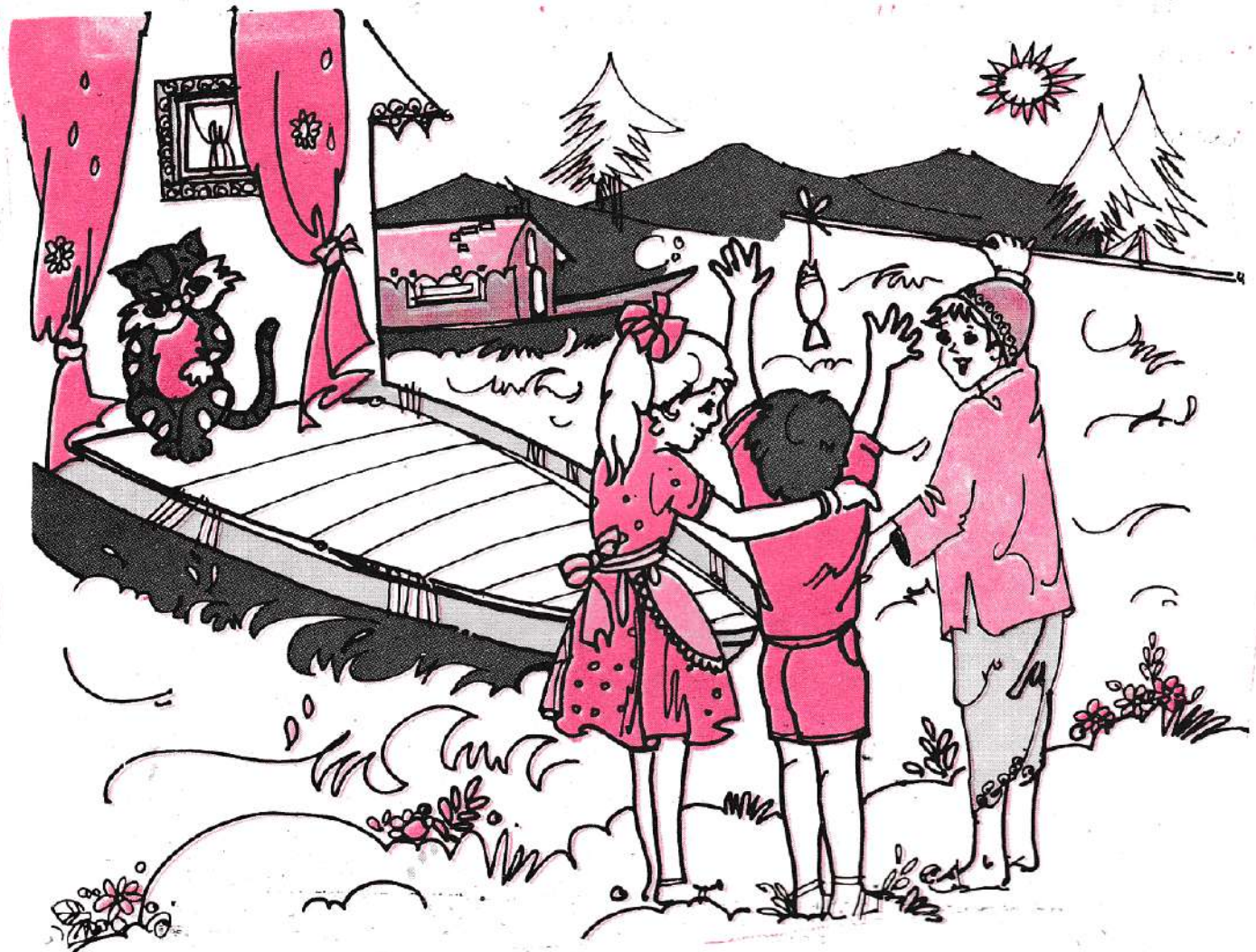
तब माँ खुद खिड़की की मुँडेर पर चढ़ गयीं जैसे कि पपाया को गोदी में लेकर वे खुद भी पानी में कूदना चाहती हों। इस पर पपाया चीख़ी और अकड़ गयी। उसने अपने सारे पंजे बाहर निकाल लिये।

लेकिन माँ पानी में नहीं कूदी। वह धीरे-धीरे सावधानी से लकड़ी के उस सँकरे तख़्ते पर उतरीं, जो उस हाउसबोट को और धरती के एक छोटे-से टुकड़े को जोड़ रहा था। वह छोटा-सा टापू था। वहाँ विलो (मजनू) के पेड़ उगे थे। ऐसे पेड़ उसने पहले भी देखे थे। माँ ने धीरे-से उसे ज़मीन पर उतार दिया। पपाया ग़ुस्से से फिर गुर्रायी, क्योंकि वहाँ की ज़मीन गीली थी और रेतीली भी नहीं थी। इस तरह की ज़मीन की उसे घर में आदत नहीं थी। इसलिये वह अपने गुदगुदे पंजों से, दबे पाँव ज़मीन

सूँघती हुई इधर-उधर घूमने लगी। उसने मन-ही-मन सोच लिया कि शायद सब ठीक ही रहेगा।

यह एक बहुत छोटा-सा टापू था। जिसके एक किनारे पर विलो के पेड़ उगे थे। वहीं उनकी 'स्टार ऑफ कश्मीर' हाउसबोट टोहकर लगा दी गयी थी। दूसरे तट पर छरहरे, ऊँचे-ऊँचे चिनार के तीन पेड़ थे। बेचारी पपाया को जल्दी ही पता चल गया कि वह जगह भी शहर की तरह लोगों से भरी पड़ी है। वहाँ भी वैसी ही चहल-पहल थी। वह हाउसबोट के लकड़ी के तख़्ते पर जल्दी से दौड़कर आ गयी और आँखें फाड़-फाड़कर डरी-डरी टापू को घूरने लगी। बाद में तो उसे आदत पड़ गयी और वह वहाँ आने-जाने लगी। अब उस जगह को वह अच्छी तरह जान गयी थी।

टापू पर इतनी चहल-पहल और भीड़-भाड़ हाउसबोट के मालिक अब्दुल करीम की वजह से थी। वह स्वयं अपने परिवार के साथ एक छोटी-सी नाव पर रहता था, जो 'स्टार ऑफ कश्मीर' से बँधी थी। वह थी तो एक छोटी-सी हाउसबोट ही, किन्तु बहुत छोटी और साधारण-सी। उसकी छत छप्पर की थी और ज़मीन चिकनी मुलायम मिट्टी से लिपी हुई। उसके कमरे छोटे और ख़ाली थे। न वहाँ छपे पर्दे थे, न फूलों के गमले। दीवार पर कोई तस्वीर भी नहीं थी। अब्दुल करीम उसी में रहता था। नीरा और नरेन की माँ का सारा काम अब्दुल हमीद की पत्नी ही करती थी। वही उनका खाना बनाती थी। उसी नाव पर एक मचान था, जिसे उसने रसोईघर बना रखा था। वहाँ मिट्टी का चूल्हा था, जिसमें वह लकड़ी जलाती थी। बर्तनों के लिए लकड़ी के तख़्ते लगे थे और लकड़ी के चमचों को टाँगने के लिए कील लगी थी। यह एक पिन की तरह एकदम साफ़ और चमकती रहती थी।

अब्दुल हमीद के तीन बच्चे थे। सबसे बड़े लड़के का नाम अली था। वह हाउसबोट पर नौकरी करता था और नीले रंग की साफ़ कमीज़ पहने रहता था। वह लड़का बहुत ही शांत स्वभाव का था। पपाया भी उसे पसन्द करने लगी थी, क्योंकि वह उसे प्यार से थपथपाता, और कभी-कभी कुछ खाने को भी दे देता था। किन्तु पहले दिन अली ने पपाया को बहुत डरा दिया था। उसने पहले टापू पर लगे नल पर प्लेट और गिलास धोये। फिर अचानक अपनी कमीज़ उतारी, पतलून ऊपर चढ़ायी और पानी में कूद पड़ा। पपाया बहुत डर गयी और उसके रोंगटे खड़े हो गये। उसे यक़ीन हो गया कि अली पानी में डूब गया है। लेकिन जब अली ने अपना सिर पानी

से बाहर निकाला और उसकी तरफ़ देखकर मुस्कुराया तो उसे बड़ी हैरानी हुई। वह विलो के पेड़ों की छाँव में, साफ़ हरे-हरे पानी में, छप-छप करता और ज़ोर-ज़ोर से पानी उछालता हुआ चारों तरफ़ तैरता रहा।

तभी किसी ने ज़ोर से पुकारा, ''अली, अली !''

पपाया ने ऊपर देखा तो उसे ढीले-ढाले कपड़े पहने एक छोटी-सी गुलाबी चेहरेवाली लड़की कुकबोट से आती हुई दिखायी दी। उसके छोटे-छोटे हाथों में एक प्यारा-सा मोटा बच्चा था। वह लड़की आकर पपाया की नाक के ठीक नीचे, टापू के किनारे बैठ गयी। फिर उसने बच्चे को पानी में डुबकी लगा दी। बच्चा पानी में छटपटाने लगा। हालाँकि पानी पपाया पर नहीं गिरा लेकिन बच्चे को छटपटाते देख उसे बहुत बुरा लगा। उसे बच्चे पर तरस आने लगा। बच्चे का चेहरा चिल्लाने से लाल हो गया था। इसे तमाशा और खेल समझते हुए छोटी लड़की उसे पानी में लटकाये ही रही और साथ-साथ उसके सिर पर भी पानी डालती रही। बच्चे की आँखों और मुँह से पानी टपक रहा था और वह खूब चिल्ला रहा था। तभी बच्चे की माँ कुकबोट से बाहर आ गयी। वह लम्बे क़द की थी और उसका चेहरा अली की तरह सुन्दर था। वह अपने हाथ में एक छोटी और साफ़ कमीज़ लिये हुए थी। पानी के पास आकर उसने बच्चे को बाहर निकाला। फिर उसे कपड़े पहनाकर, थपथपाने और चुप कराने लगी। वह कुछ ही देर में कन्धे से लगकर सो गया।

उस परिवार को पानी से बहुत प्यार था। पपाया को इस बात का पता बाद में तब लगा, जब लड़की ने बच्चे को माँ की गोदी में देते ही अपने कपड़े उतारे और पानी में कूद पड़ी। वह पानी उछालती और चिल्लाती हुई आवाज़ लगाने लगी, ''अली, अली ... मुझे देखो।''

वहाँ बैठी पपाया डर और हैरानी से जम-सी गयी, जब तक कि छोटी लडकी पानी से बाहर नहीं निकल आयी। तभी उसका ध्यान पपाया की ओर गया। वह धीरे-से चिल्लायी और मुँह पर हाथ रखकर भागती-भागती अन्दर चली गयी। थोड़ी ही देर बाद वह माँ का हाथ खींचती वापस आ गयी और अपनी माँ से ज़ोर-ज़ोर से अपनी बोली में बात करने लगी। पपाया को उसकी बात समझ में नहीं आयी, क्योंकि वह ज़ुबान उसने कभी नहीं सुनी थी। पपाया को उसकी बारीक और फटी-फटी आवाज़ एकदम अच्छी नहीं लगी। इसलिए वह कूदकर हाउसबोट में चली गयी।

तभी छोटी लड़की तख़्ते पर दौड़ती हुई आयी और खिड़की से हाउसबोट के

अन्दर झाँकने लगी। उसे देखकर नीरा कटोरे में से मुट्ठी भर चेरी लेकर बाहर आयी और उसे दे दी। नीरा ने पपाया को गोद में उठा लिया और उस छोटी-सी बच्ची के पास तक ले आयी, लेकिन बच्ची ने अपना हाथ पीछे कर लिया। उसने पपाया को थपथपाया नहीं, इस नाते पपाया छोटी बच्ची की बहुत आभारी थी।

उसी दिन, शाम को पपाया के परिवार के लोग 'किंगफ़िशर' नाम के एक शिकारे पर सैर के लिये निकले। वे गद्दियों पर लोटने लगे। पपाया से 'गुड बाइ' करने के लिये उन्होंने पर्दा हटाया। वह छज्जे पर बैठी-बैठी उन्हें देख रही थी और उनके लिये परेशान भी हो रही थी। तभी अली और उसकी छोटी बहन अपनी छोटी नाव पर घूमने की लिए निकल गये। जब सब चले गये तो पपाया लकड़ी के तख़्ते से धीरे-धीरे उतरकर टापू पर आयी। उसने टापू की अच्छी तरह छान-बीन करने का फ़ैसला कर लिया।

जब पपाया छोटी कुकबोट पर आयी तो एकदम घबराकर पीछे हट गयी, क्योंकि वहाँ पानी के अन्दर एक छोटी-सी भूरी चिड़िया एक डोर से नाव से बँधी हुई थी। ऐसा लगता है कि कश्मीर में चिड़ियाँ भी आधे समय पानी में ही रहती हैं। वह चिड़िया कुछ-कुछ मुर्गी की तरह लग रही थी। लेकिन छोटी चोंच के बदले उसकी नारंगी रंग की चपटी चोंच थी। चिड़िया नाव के चारों तरफ़ तैर रही थी और ज़ोर-ज़ोर से क्वैक-क्वैक कर रही थी। पपाया ने दूर से सावधानी से देखकर मन-ही-मन यही तय कर लिया कि यह मुर्गी तो हो नहीं सकती, हाँ, कोई दूसरी चिड़िया है। वह तैर तो सकती है, लेकिन इसे पानी अच्छा नहीं लगता है। इसलिये यह बोट से बँधी रस्सी से खुद को छुड़ाना चाहती है। आख़िर पपाया उसके पास पहुँच ही गयी। पपाया ने प्यार से उससे पूछा, ''क्या बात है? तुम कौन हो? तुम्हें किसने बाँधा है?''

वह चिड़िया पपाया से उतनी ही सहमी जान पड़ी, जितनी कि शुरू में पपाया उससे डर रही थी। वह पानी में छपछप करने लगी, जिससे कि पानी ख़ूब उछला। उसने रस्सी से बँधे अपने पैर को भी बहुत ज़ोर से खींचा। इससे उसके पैरों को चोट ज़रूर लगी होगी।

''मैं तुम्हें खाऊँगी नहीं,'' पपाया ने कहा, ''मैं तो पानी में उतर भी नहीं सकती। मुझे इस बात का दुःख है कि तुम रस्सी से इतनी बुरी तरह से बँधी हो। हाय!''

तब चिड़िया शान्त हो गयी और दुखी होकर क्वैक-क्वैक करने लगी—''मैं

एक जंगली बत्तख हूँ। मैं झील में चारों तरफ़ डुबकी लगाती तैरते हुए मेंढक और कीड़े-मकोड़े पकड़ते हुए घूमा करती थी। एक दिन एक बड़े लड़के ने मुझे जाल में पकड़ लिया। अब ये लोग मुझे हमेशा इसी तरह बाँधे रखते हैं। मेरे पैर बहुत दुखते हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि ये लोग मेरे साथ क्या करना चाहते हैं ? शायद ये लोग मुझे खा जायेंगे।'' उसकी आवाज़ भर्रा गयी और वह सुबकने लगी।

पपाया को बहुत बुरा लगा। उसने कहा, ''मैं इन्हें ऐसा नहीं करने दूँगी। मैं तुम्हें आज़ाद कर दूँगी।''

''कैसे ?'' बत्तख चहक पड़ी, ''क्या तुम मेरी रस्सी काट सकती हो ?''

''नहीं'', पपाया ने कहा, ''क्योंकि तुम्हारी रस्सी गहरे पानी के बीच आ रही है, गीली है, और पानी के अन्दर लटक रही है। लेकिन मैं कोई और तरीक़ा सोचूँगी। हम लोग यहाँ कुछ दिन रहने वाले हैं, तब तक मैं तुम्हें आज़ाद करने का कोई तरीक़ा निकाल ही लूँगी। क्या ये लोग तुम्हें खाना देते हैं ?'' उसने पूछा।

''नहीं,'' बत्तख फिर सुबक पड़ी, ''मैं तो पानी के छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े और पानी की घास में जो भी पाती हूँ, खा लेती हूँ। मेरी रस्सी इतनी छोटी है कि मैं शिकार के लिये दूर तक जा भी नहीं सकती।''

उसी समय, पपाया को पानी के बीच छोटी-छोटी रुपहली मछलियाँ जल्दी-जल्दी इधर-उधर तैरती दीख पड़ीं। उन्हें देखकर पपाया बहुत ही घबरा गयी और उसने बत्तख से इस बारे में पूछा।

''हाँ, इसमें ढेर सारी मछलियाँ हैं''—बत्तख ने बताया, ''क्या तुम, उन्हें चारों तरफ़ तैरते हुए नहीं देख सकती ?''

''क्या तुम इन्हें पकड़ सकती हो ?'' पपाया ने पूछा। पपाया अपना इस खोज से बहुत खुश थी, क्योंकि अब तक तो उसने बाज़ार से लायी गयी मरी और ठण्डी मछलियाँ ही देखी थीं।

''हाँ, अगर तुम्हें पसन्द हैं,'' बत्तख ने कहा, ''मुझे भी पानी की छोटी-छोटी मछलियाँ बहुत अच्छी लगती हैं।''

टापू के किनारे की मिट्टी गीली और नम थी। लेकिन पपाया अब पानी के किनारे उसे कुरेदने लगी। पानी के अन्दर सैकड़ों छोटी-छोटी चमचमातीं, झपटतीं और लपकतीं मछलियाँ देखकर उसकी आँखें खुली-की-खुली रह गयीं। इससे पहले उसका ध्यान उधर गया ही नहीं था। 'काश ! उनमें से एक उसे खाने के लिए मिल जाती।'

वह अपने होंठ चाटने लगी थी।

"क्या तुम्हें मछली अच्छी लगती है?" बत्तख ने पूछा।

"बहुत ! बहुत ही अच्छी लगती है।" पपाया घुरघुरायी।

"जब कोई देख नहीं रहा होगा, तब मैं कुछ मछलियाँ पकड़ने की कोशिश करूँगी।" बत्तख ने कहा।

उसी समय नाववाले की पत्नी ने खिड़की में से बाहर झाँका और पानी झील में उँड़ेल दिया। उसने इतने पास से पानी फेंका कि वह छिटककर पपाया के सिर पर आ गिरा। वह अपनी जान बचाकर भागी। पानी से बत्तख भी भीग गयी और वह क्वैक क्वैक करती, चीख़ती-चिल्लाती रस्सी को इधर-उधर खींचने लगी।
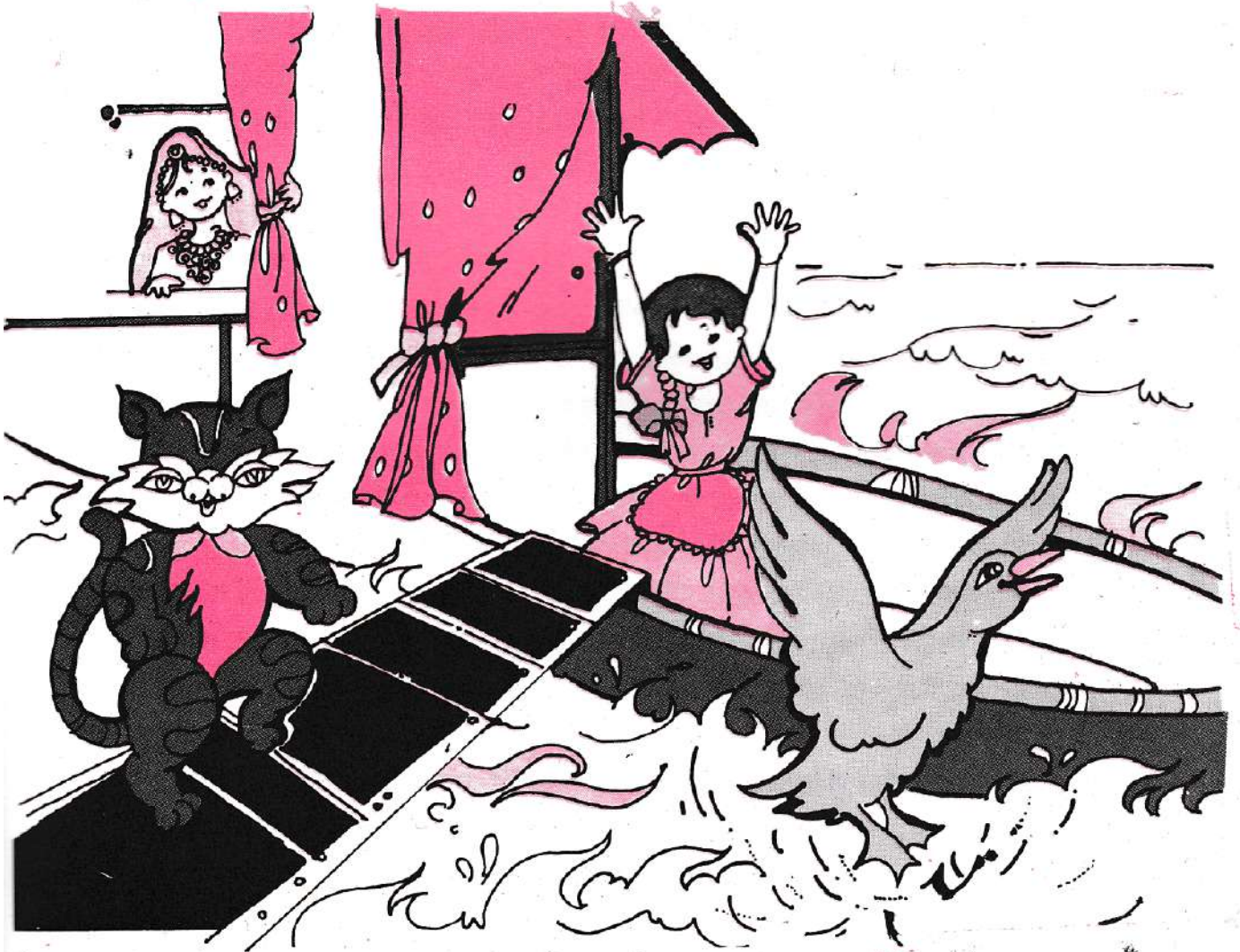
रात को बेल-बूटों से तराशी गयी नीची छत वाले छोटे कमरे में बहुत ही गरमी थी। सब अपने सँकरे पलंगों पर करवट बदलते-बदलते सो गये, लेकिन पपाया को नींद नहीं आयी। पहले वह नीरा के पलंग के पास बैठी रही, जैसी कि उसे घर में आदत थी लेकिन वहाँ बहुत ही गर्मी थी। तब वह नीचे सफ़ेद क़ालीन के ऊपर चढ़ गयी। वह भी बहुत गर्म थी। उसने कमरे के एक कोने में लकड़ी के फ़र्श पर लेटने की कोशिश की। वहाँ कुछ ठण्डक थी लेकिन हवा का नाम तक नहीं था। इसलिये वह कूदकर खिड़की पर चढ़ गयी। आराम से बैठने के लिए खिड़की काफ़ी चौड़ी तो नहीं थी, लेकिन वहाँ थोड़ी हवा थी, जिससे उसे अच्छा भी लगा और आराम भी मिला। पपाया वहाँ लेटे-लेटे ही अँधेरे में दूर-दूर तक हाउसबोट की टेढ़ी-मेढ़ी परछाइयों को देखती रही।

वहाँ सोना असम्भव था।। गर्मी के साथ-साथ शोरगुल भी बहुत था। ऐसा लग रहा था कि जैसे ये लोग बाज़ार के बीचोंबीच रह रहे हों। ऐसा नहीं लगता था कि ये लोग रुपहले, सलेटी, चिनार और विलो के झूमते पेड़ों तथा गुलाबी कमलों से भरी बड़ी झील के अन्दर रह रहे हों। झील में चारों तरफ़ बत्तखों के झुण्ड थे, जो सारे दिन इधर-उधर तैरते रहते थे। ये नाव से फेंकी हुई चीज़ें चुटर-चुटर खाते और पानी के कीड़े-मकोड़ों की ताक में लगे रहते। ऐसा लगता था कि वे रात को एक मिनट के लिए नहीं सोते। पपाया ने उनके झुण्ड देखे। बत्तखों में से कुछ नारंगी चोंचवाली उजली और सफ़ेद, कुछ गहरे भूरे और हरे रंग की थीं। वे सब अपनी मोटी चोंच के साथ क्वैक-क्वैक करती हुई उस हाउसबोट का चक्कर लगाती एक दूसरे के साथ खेल रही थीं।

पपाया सोच रही थी कि क्या वे कभी सोती भी हैं। तभी टापू की ओर से एक मुर्ग़ी की आवाज़ आयी। पपाया इससे ऊब गयी और झल्ला पड़ी।

दूसरी हाउसबोट में रहनेवाले परिवार के लोग 'स्टार ऑफ कश्मीर' के लोगों की तरह शान्त नहीं थे। कुछ तो अपने रेडियो बहुत ही ज़ोर-ज़ोर से बजा रहे थे। उस बोट की हर खिड़की से बहुत ही तेज़ रोशनी आ रही थी। खाना बनानेवाली नाव में भी बहुत शोर हो रहा था। तभी पपाया ने पासवाली कुकबोट में एक बूढ़े आदमी को चुपचाप हुक्का गुड़गुड़ाते देखा। उसी नाव के अन्दर एक औरत बर्तन माँजती हुई दिखायी दी, जो उस बूढ़े आदमी पर बराबर चिल्ला रही थी। उस नाव पर तीन लड़कियाँ बैठी थीं—बहुत ही ख़ूबसूरत। पानी में खिली सफ़ेद लिली की तरह;

लेकिन वे भी आपस में लड़ रही थीं। पपाया छोटी-सी खिड़की में से उन्हें देख सकती थी। इस समय भी वे गली के जंगली कुत्तों की तरह आपस में झगड़ रही थीं।

आख़िरकार, रसोईवाली औरत ने डाँटना बन्द कर दिया और झुककर नदी के पानी में बर्तन धोने लगी। उसके बर्तन धोने से बत्तखों के चारों तरफ़ पानी के भँवर-से बन गये। बत्तखें इससे डरकर इधर-उधर भाग गयीं। तभी एक शिकारी काले और गन्दे पानी के बीच से उधर आया। वह एकदम से पपाया की नाव के नीचे आ गया और हाउसबोट से टकरा गया। तब तक अली भी कुकबोट से बाहर निकल आया था।

पपाया ने लम्बी साँस लेकर अँगड़ाई ली, पैर फैलाये और सोचने लगी कि वह वहाँ कैसे सो सकेगी ? इसी बीच उसने एक धीमी, गहरी लेकिन भर्राई-सी आवाज़ सुनी। वह आवाज़ कहाँ से आयी होगी ? पहले उसने पानी में झाँका, फिर आकाश की ओर देखा और जान गयी कि तारे बादलों से ढक गये हैं। कुछ ही देर में पानी की बड़ी-बड़ी और गरम-गरम बूँदें टपकने लगीं। पपाया, खिड़की से नीरा के पलंग के पायदान की तरफ़ कूद गयी। फिर सिकुड़कर वह सोने का बहाना करने लगी और सोचने लगी कि कुल मिलाकर उस समय सबसे अच्छी बात क्या थी ? ख़ामोशी या सर्दी !

अगले दिन नीरा और नरेन बड़े ही बेचैन और उतावले हो उठे थे। वे खाने की मेज़ पर बैठकर सुबह का नाश्ता भी चैन से नहीं कर सके थे। आख़िरकार, माँ ने उन्हें अपनी जेबें चेरी और आलूचों से भरने दीं और वे मेज़ से कूदकर, छोटे शिकारे में पहुँच गये; जहाँ अली उनकी बाट देख रहा था। वे शिकारे में कूदे और उन्होंने उसे धकेलकर आगे कर दिया। नरेन ने छोटी पतवार अली से अपने हाथ में ले ली थी। शुरू में तो नाव चक्कर काटने लगी और पास में जाती हुई एक सब्ज़ीवाली नाव से टकराते-टकराते बची। बाद में अली ने उसे पतवार चलाना सिखा दिया और वे आगे बढ़ गये। नरेन चिल्लाने लगा, "देखो-देखो, मैं नाव चला रहा हूँ।"

माँ-बाप के बिना बच्चों को इस तरह जाते देख पपाया को बड़ी चिन्ता हो रही थी। उसे अली पर एकदम विश्वास नहीं था। अली के दिमाग़ में कभी भी पानी में कूदने की सनक आ सकती है ; साथ ही वह उन दोनों को भी खींच सकता है। वह छज्जे पर पीटूनिया के गमलों के बीच बैठी इन्तज़ार करती रही। तभी आलू-प्याज के ढेर, छोटी-छोटी गुलाबी फलियों और हरे पालक से भरा एक शिकारा वहाँ आया। माँ अपनी नाव से झुककर उसमें से सब्जी ख़रीदने लगी।

तभी, नीरा और नरेन अपने हाथों को हिलाते और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते हुए वापस आ गये। उनके इस तरह खड़े होने से शिकारा डोलने लगा। अली शिकारे को सीधा टापू तक ले आया और वे लोग वहीं उतर गये। उन्हें देखने के लिए पपाया को लकड़ी के तख़्ते पर जाना पड़ा। वह देखना चाहती थी कि वहाँ इतना शोर-शराबा क्यों है ?

"अली, पहले मेरा"—नीरा गिड़गिड़ा रही थी।

"नहीं अली, पहले मेरा।" नरेन बोला।

अली नाव से उतर गया और विलो के पेड़ पर चढ़ गया। पपाया की समझ में नहीं आया कि यह सब क्या हो रहा है ! वह अली को देख भी नहीं पा रही थी, क्योंकि वह सलेटी और रुपहले पत्तों से भरी टहनियों पर बहुत ऊपर चढ़ गया था। तब उसने देखा कि वह बहुत लम्बी-लम्बी टहनियाँ काट-काटकर नीचे फेंक रहा है और नीरा और नरेन उन पर झपट रहे हैं। वे दोनों लम्बी सन्टी लेने की कोशिश कर रहे थे। अली की बहन ज़ोहरा भी गोदी में मोटा-ताज़ा बच्चा लिए यह सब देखने के लिए बाहर आ गयी।

अली पेड़ से कूदा और उसने अपनी जेब से एक नुकीला चाकू निकाला। सफ़ेद काग़ज़ और रील निकाले, जो वह साथ ले आया था। साथ ही चमकते हुए बड़े-बड़े हुक भी। अली पानी के किनारे बैठ गया और अपना काम करने लगा। सभी बच्चों ने उसे घेर लिया और उसने उन लोगों के लिए विलो की सन्टी से मछली पकड़ने के काँटे बना दिये।

तब अली ने जोहरा को कुकबोट से गुंधा आटा लाने को भेजा। फिर आटे की छोटी-छोटी गोलियाँ बनायी और उन्हें हुक पर लगाकर बच्चों को दिखाने लगा कि मछली कैसे पकड़ते हैं। हुक में मछली फँसने ही वाली थी कि नरेन ने झट से मछली पकड़ने की रस्सी बाहर निकाली। शुरू में पपाया ने सोचा कि उसने पानी की घास खींची है, लेकिन बाद में उसने देखा कि हुक पर कोई चीज़ चमक रही है और छटपटा रही है। वह मछली ही थी। वह चौंक गयी और उसकी आँखें हैरानी से खुली-की-खुली रह गयीं। अच्छा, तो मछली इस तरह पकड़ी जाती है और पानी से बाहर निकाली जाती है। उसने यह सब पहले कभी नहीं देखा था।

झील मछलियों से भरी पड़ी थी। इनमें से ज्यादातर छोटी-छोटी झींगा मछली थी, जो बच्चों की उँगली जितनी बड़ी थी। लेकिन कुछ बड़ी भी थीं, अली के हाथ

जितनी लम्बी। सुबह-ही-सुबह दोनों बच्चों ने ढेर सारी मछलियाँ जमा कर ली थीं। तभी ज़ोहरा पानी से भरा एक जंग लगा कनस्तर ले आयी और उन लोगों ने सारी मछलियाँ उसमें डाल दीं।

नीरा लकड़ी के तख़्ते तक पपाया को यह सब दिखाने के लिए ले आयी, लेकिन पपाया छटपटाती मछलियों को देखकर पीछे हट गयी। वैसे उनकी ख़ुशबू तो उसे अच्छी लग रही थी। जब तक वे उसकी प्लेट में रखकर उसे नहीं दी गयी और उन्होंने छटपटाना बिल्कुल बन्द नहीं कर दिया, उसने उन्हें नहीं खाया। खाने के लिये वह देर तक रुकी रही। इस डर के मारे कि कहीं कोई मछली कूदकर उसकी नाक पर न आ जाये। मछलियाँ ताज़ी और कोमल थीं और खाने में बड़ी ही स्वादिष्ट। इतनी अच्छी मछलियाँ पपाया ने पहले कभी नहीं खायी थीं। वह कूदकर नीरा की
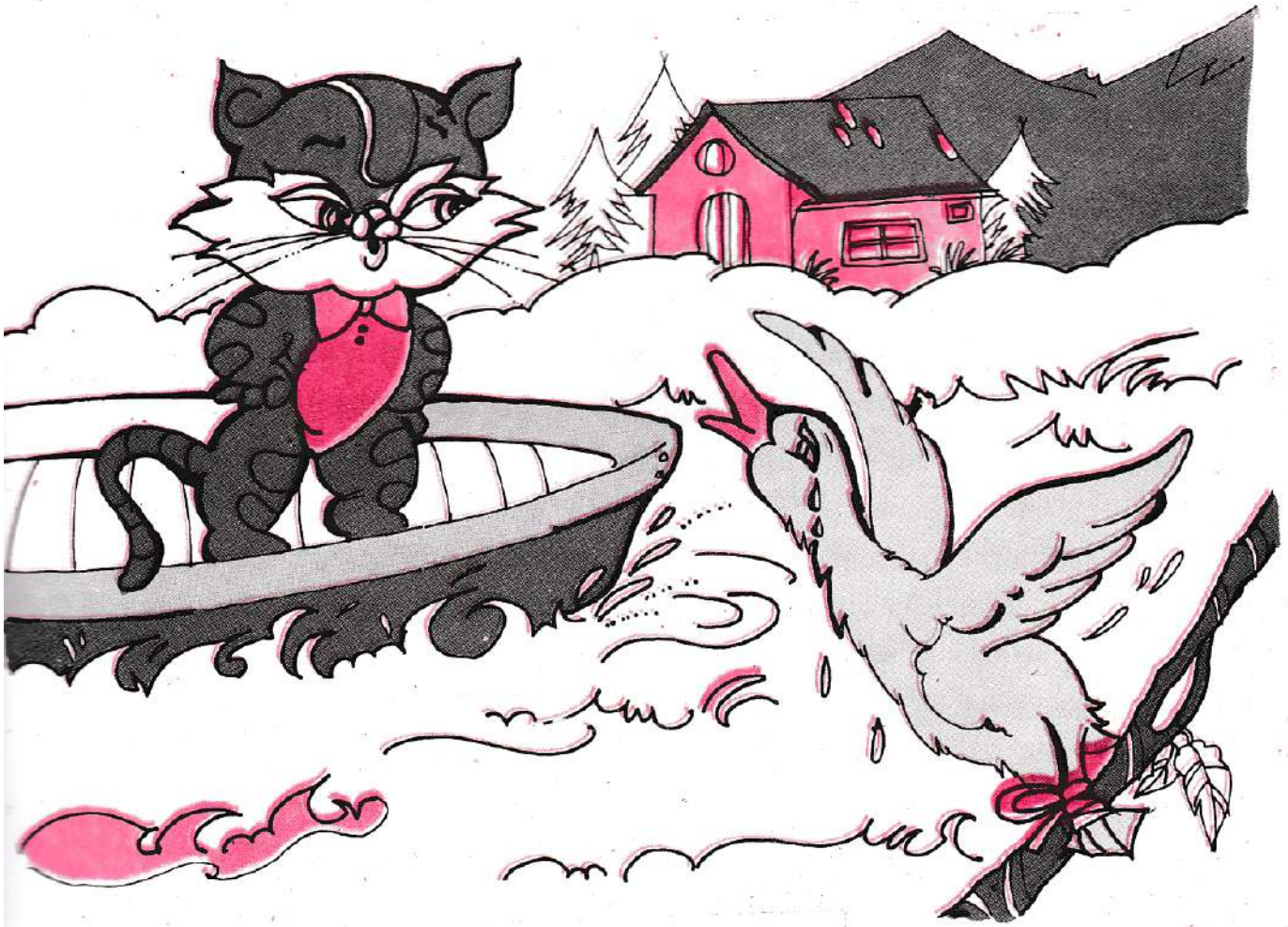
गोदी में आ गयी और उसने अपनी मूँछें उसके कपड़ों से साफ़ कर लीं। वह खाने के आधा घण्टे बाद तक भी स्वाद ले-लेकर घुरघुराती रही।

अली अपने परिवार के लिए बड़ी मछली रसोईवाले कुकबोट में ले गया।

दोपहरी में पपाया उस बेचारी बत्तख से पास गयी जिसके पैर अभी तक इस नाव से बँधे थे। अपने होंठ चाटते हुए उसने कहा, "आह ! झील की मछलियों में बड़ा ही स्वाद है। तुम्हारा पानी में रहना तो बहुत अच्छा है ; तुम जितनी चाहो, उतनी मछलियाँ पकड़ कर खा सकती हो।"

"लेकिन मैं तो मछली पकड़ नहीं सकती", बेचारी छोटी बत्तख ने क्वैक-क्वैक की, "मैं एक कोने में बँधी हुई हूँ। कीड़े मकोड़े भी मुझसे बहुत दूर रहते हैं, क्योंकि मैं पानी बहुत छिटकाती हूँ। अपने आसपास की सारी घास तो मैंने खा ली है। मेरी रस्सी बहुत ही छोटी है। मैं कहीं आ-जा भी नहीं सकती।"

पपाया को केवल खाने के बारे में ही सोचते रहने से बहुत ही बुरा लगा। बेचारी बत्तख तो कहीं जा भी नहीं सकती थी और क़ैद में भूखी पड़ी थी।

"मैं तुम्हें छुड़ाने की तरकीब सोच रही हूँ," उसने कहा, "मुझे यक़ीन है कि कोई-न-कोई रास्ता ज़रूर निकल आयेगा।"

उसी समय जोहरा ने खिड़की खोली और झाँककर देखा कि पपाया किनारे बैठी है और पानी में गिरनेवाली है। ज़ोहरा उसे देखकर बहुत ज़ोर से चिल्लायी। जैसे इससे ज्यादा अजीब बात उसने पहले कभी नहीं देखी हो। उसकी चीख़ सुनकर पपाया जल्दी से हाउसबोट में खिसक गयी। वह सोचने लगी कि इस तरह उसका क़ैद में पड़े रहना कितना बुरा है और वह लड़की कितनी बदतमीज है।

धीरे-धीरे पपाया वहाँ खूब आनन्द लेने लगी। उसे हाउसबोट का जीवन अच्छा लगने लगा। नीरा और नरेन के पास बैठकर, मछली पकड़ते देखते रहना उसे बहुत अच्छा लगता था। वे एक-के-बाद-एक चमकीली मछलियाँ पकड़कर डिब्बे को भरने लगे। वह जानती थी बाद में एक-दो मछली वे उसकी प्लेट मे अवश्य डाल देंगे। वह वहाँ बैठी-बैठी अपने होंठ चाटती रही और साफ़-सफ़ेद पंजों से अपनी मूँछें साफ़ करती रही।

यहाँ शुरू-शुरू में, अगर घर के लोग उसे अकेला छोड़कर शिकारे में घूमने के लिए जाते तो उसे बहुत डर लगता था। वह अकेले में बहुत घबराती थी। वे लोग

घण्टों बाहर रहते और जब लौटकर आते तो नीरा लपककर उसे गोद में उठा लेती और कहती, "अरे हम तो शालीमार बाग़ घूमकर आये हैं। तुमने इतने सुन्दर फ़व्वारे और फूल कभी नहीं देखे होंगे। हम रेशम की फ़ैक्टरी देखकर आये हैं। मैं तुम्हारे लिये कुछ रेशम के कीड़े लेकर आयी हूँ।"

यह सब सुनकर पपाया कुछ पीछे हट जाती और ग़ुस्सा दिखाती। वह यह बताने की कोशिश करती कि इस तरह से घूमने जाने में कितना ख़तरा है।

अब पपाया ने अपने मन बहलाने के तरीक़े ढूँढ़ लिये थे। उनमें से एक था— कि वह कभी-कभी टापू पर जाकर, छोटी बत्तख से बातें करती थी। दूसरा था— दुछत्ती पर चढ़ना, जहाँ अली अपने प्याले और प्लेट आलमारी में रखता था। यहाँ पर गमलों में आइरिस तथा जिरेनियम के फूल खिले रहते थे। इनके पीछे दुबककर वह अपने को छिपा सकती थी और वहीं बैठी-बैठी बिना किसी ख़तरे के सामने फैली इस झील को देख सकती थी।

वहाँ पर पपाया के देखने के लिए बहुत कुछ था। अपनी सुनहरी आँखों से उस खूबसूरत नज़ारे को देखते हुए अपना सारा दिन काट सकती थी। वहाँ हर ओर पंछी-ही-पंछी थे। ये परिन्दे चारों तरफ़ उड़ते रहते थे और उन्हें कश्मीरी बच्चों की तरह पानी से डर नहीं लगता था। वहाँ छोटी-छोटी किंग चिड़ियाँ थीं। मैदानों-जैसी बड़ी-बड़ी नहीं, जिन्हें पपाया ने पहले उड़ते देखा था। वहाँ छोटी-छोटी रंग-बिरंगी चिड़ियाँ चमकते जवाहरातों की तरह विलो पेड़ की रुपहली टहनियों पर चुपचाप चिपककर बैठ जातीं या हाउसबोट की बालकनी की मुँडेर पर उड़कर आ जातीं। फिर अचानक उड़ती हुई आतीं और साफ़ पानी में डुबकी लगा एक चमचमाती छोटी मछली अपनी लम्बी चोंच में दबाकर एकदम ऊपर आ जातीं।

उन्हें ऐसा करते देख पपाया को बड़ी जलन होती थी, क्योंकि वह ऐसा नहीं कर सकती थी। इसलिए वह मारे जलन के घुरघुराने से अपने को रोक नहीं पाती थी लेकिन वे उसकी ओर ध्यान नहीं देतीं और छोटी-छोटी मछलियों को इस प्रकार निगल जातीं जैसे कि आइसक्रीम हो। वहाँ कई तरह की चिड़ियाँ थी—काली, सफ़ेद, कटी पूँछवाली लम्बी तीर कमान-जैसी चिड़ियाँ, जो झुण्ड बनाकर पानी पर आतीं और मछलियाँ पकड़ कर उड़ जातीं।

वहाँ सैकड़ों शिकारे भी थे, जो हाउसबोटों और किनारे के बीच मुसाफ़िरों को लाते और वापस ले जाते थे। यात्रियों के पास अपने थैले, टोकरी और कैमरे होते

थे। शिकारों में वे भी गुलाबी गमलों के बीच घूमते रहते थे। वहीं कश्मीरी लोगों ने मिट्टी और लकड़ी के तैरते हुए टापू बना रखे थे। उन पर टमाटर और दूसरी सब्ज़ियाँ उग रही थीं। यात्री वहाँ भी आ जा रहे थे।

व्यापारियों के शिकारों पर सबसे ज़्यादा चहल-पहल थी। वह अपने शिकारों पर लदा सामान एक हाउसबोट से दूसरे हाउसबोट पर ढोते बड़े मज़े से जाते। कुछ में बहुत बारीक ऊन से बुनी और कढ़ी हुई कश्मीरी शालों की गठरियाँ थीं। अन्य पर व्यापारी क़ालीन लादकर बड़े गर्व से बेच रहे थे। उन्हें खोलकर खरीदनेवालों को दिखाते तो वे चमक उठते। क़ालीन कई तरह के थे—लाल रंग के, जामुनी रंग के और पुराने पर्शियन नमूनों के। कुछ तो राजा-महाराजाओं के बड़े-बड़े कमरों के बराबर थे। कुछ छोटे नमाज़ पढ़ने के लिए थे, जिन पर एक आदमी झुककर नमाज़ पढ़ सकता था। कुछ नावों पर फरों से बने कोट, टोपी और दस्ताने थे; साथ ही, अखरोट की लकड़ी से तराशे हुए डिब्बे, ट्रे तथा बच्चों के खेलने के लिए नावें थीं। ये सारी सजावटी चीज़ें भूरे और मक्खनी रंग की पेपरमाशी से बनी थीं—बहुत ही सुन्दर और चमकदार पालिश की हुई।

पपाया ने सोचा कि उन सबमें सबसे सुन्दर फूलों से भरे शिकारे हैं। ऐसा लगता था मानों झील के ऊपर एक छोटा-सा बाग़ तैर रहा हो। इसकी परछाईं उसके पीछे-पीछे चमकती दिखायी देती थी। यहाँ फूल कई तरह के थे। लम्बी-लम्बी सीधी डंडी के ग्लैडीओलाई, फोक्स के गुच्छे-के-गुच्छे, गुलाबी और पीले रंग की कलियों के गुच्छे में खिले गुलाब, सफ़ेद और जामुनी रंग की आइरिस, और खुशबूदार पिटूनियाँ। पपाया ने सोचा, यह नज़ारा तो बहुत सुन्दर है, लेकिन उसे तो मछली पकड़ने जाती हुई नावों की खुशबू कहीं ज़्यादा अच्छी लगती थी।

इन सबमें डाक ले जानेवाली नाव सबसे अनोखी लग रही थी। उसमें एक लाल डिब्बा था, जिसमें लोग अपने पत्र डाल देते थे। डाकिया गद्दी का सहारा लगाये लेटा था। बीच-बीच में घण्टी बजा देता था। साथ ही, यह भी देखता रहता था कि कोई उससे टिकट तो नहीं लेना चाहता है।

वहाँ ढेर सारे कश्मीरी बच्चे थे, जिन्हें पपाया देख सकती थी। ये बच्चे झील में नहाने के लिए डुबकी लगाते। एक दूसरे के साथ पानी में लुका-छिपी खेलते और बड़ी-बड़ी मछलियों की तरह तैरते थे। वे पानी में भी उतनी ही आसानी से खेल रहे थे, जितना कि ज़मीन पर खेलते थे। अपनी नावों को तिकोनी पतवारों से आसानी से

चला रहे थे। पपाया की समझ में कुछ नहीं आया और उसने अपना सिर हिला दिया।

एक दिन पपाया फूलों के गमलों के बीच लेटी-लेटी कोई सपना-सा देख रही थी। वह अपनी अधखुली आँखों से झील का दृश्य देख रही थी। तभी उसने बहुत-से आदमियों की एक साथ सुरीली आवाज़ सुनी। उसका ध्यान बँट गया। उसने देखा कि कुछ आदमी एक बड़ी हाउसबोट झील में धकेलकर ला रहे थे। वे हाउसबोट की संकरी मुँड़ेर पर चारों तरफ़ घूम रहे थे और अपनी लम्बी-लम्बी लग्गियों को पानी में गड़ाते और निकालते आ रहे थे। इससे नाव पानी पर बहुत ही आसानी से तैरती हुई आगे बढ़ रही थी।

इससे अधिक सुन्दर हाउसबोट पपाया ने पहले नहीं देखी थी। ऐसा लग रहा था कि वह सफ़ेद रंग से पुती हुई है। उस पर गुलाब की बेल चढ़ रही थी, जो सफ़ेद

बारजे को ढककर उसे बहुत ही सुन्दर बना रही थी। खिड़की पर गुलाबी जिरेजियम के फूल खिले थे। उसकी छत पर गुलाबी और सफ़ेद धारी के कपड़ों की झालर थी। उसने देखा कि वह नाव उसकी नाव के पास आती जा रही है। उसे लगा कि कहीं दोनों टकरा ही न जायें। वह बड़ी सावधानी से गमलों के पीछे छिप गयी। उसकी आँखें मारे डर के स्याह हो गयी थीं, लेकिन उन आदमियों ने धीरे-से नाव को धकेलकर टापू के दूसरी तरफ़ लगा दिया। फिर किनारे पर कूदकर रस्से से टापू के खूँटे से बाँध दिया। वे लोग उसके पड़ोसी बनने जा रहे थे।

सारी दोपहरी पपाया उन आदमियों को शोर मचाते तथा इधर-उधर जाते देखती रही। वे अपना सारा सामान लगा रहे थे। जब दिन ढलने लगा और पेड़ों की परछाईं लम्बी होने लगी तो ठण्डक बढ़ गयी। तभी उसे नाव की छत पर एक नज़ारा दिखा। उसे भारी आवाज़ आती सुनायी दी, ''आख़िरकार हम लोगों ने करीने से सामान लगा दिया है या नहीं ?''

क्या सारे आदमी सामान ठीक से लगाकर, इधर-उधर घूमते और शोर मचाते यहाँ से चले गये हैं ? पपाया तनकर खड़ी हो गयी। उसके बाल खड़े और कड़े हो गये। उनकी पूँछ तन गयी। अगर लड़ना पड़े तो वह उसके लिए भी तैयार थी। उसने घूरकर देखा। उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। उसने उस नाव की छत पर एक सफ़ेद टॉम बिलौटा देखा। वह लाल और सफ़ेद छतरी के अन्दर बाहर आ जा रहा था। उसकी बिल्लौरी आँखें हरे पत्तों-जैसी, मूँछें काफ़ी लम्बी और मुलायम बालों की बड़ी घनी पूँछ थी। ऐसा बिलौटा पपाया ने कभी नहीं देखा था। वह अब अपने को बहुत ही साधारण तथा सीधी-सादी बिल्ली महसूस कर रही थी। वह टॉम बिलौटा था। वह सीधी थी और लड़ना नहीं चाहती थी। वह अपने पैर नीचे करके लेट गयी।

''क्या तुम हाउसबोट पर रहते हो ?'' उसने धीरे-से म्याऊँ किया।

''हाँ, गर्मियों में।'' सफ़ेद बिलौटे ने उसकी तरफ़ बिना ध्यान दिये अपनी पत्ते-जैसी हरी आँखों से देखते हुए लापरवाही से उत्तर दिया, ''यहाँ बड़ी बोरियत है, लेकिन कोई क्या करे ? दिल्ली में आजकल बेहद गर्मी है और बम्बई में मानसून के चलते जीना मुश्किल हो जाता है। बड़ी बारिश होती है वहाँ।''

''ओह'', पपाया सुनकर फुसफुसायी, ''तुम बहुत सफ़र करते हो क्या ?''

''हमेशा, बराबर,'' सफ़ेद बिलौटे ने लम्बी साँस लेकर झील की रेलिंग पर झुकते हुए कहा।
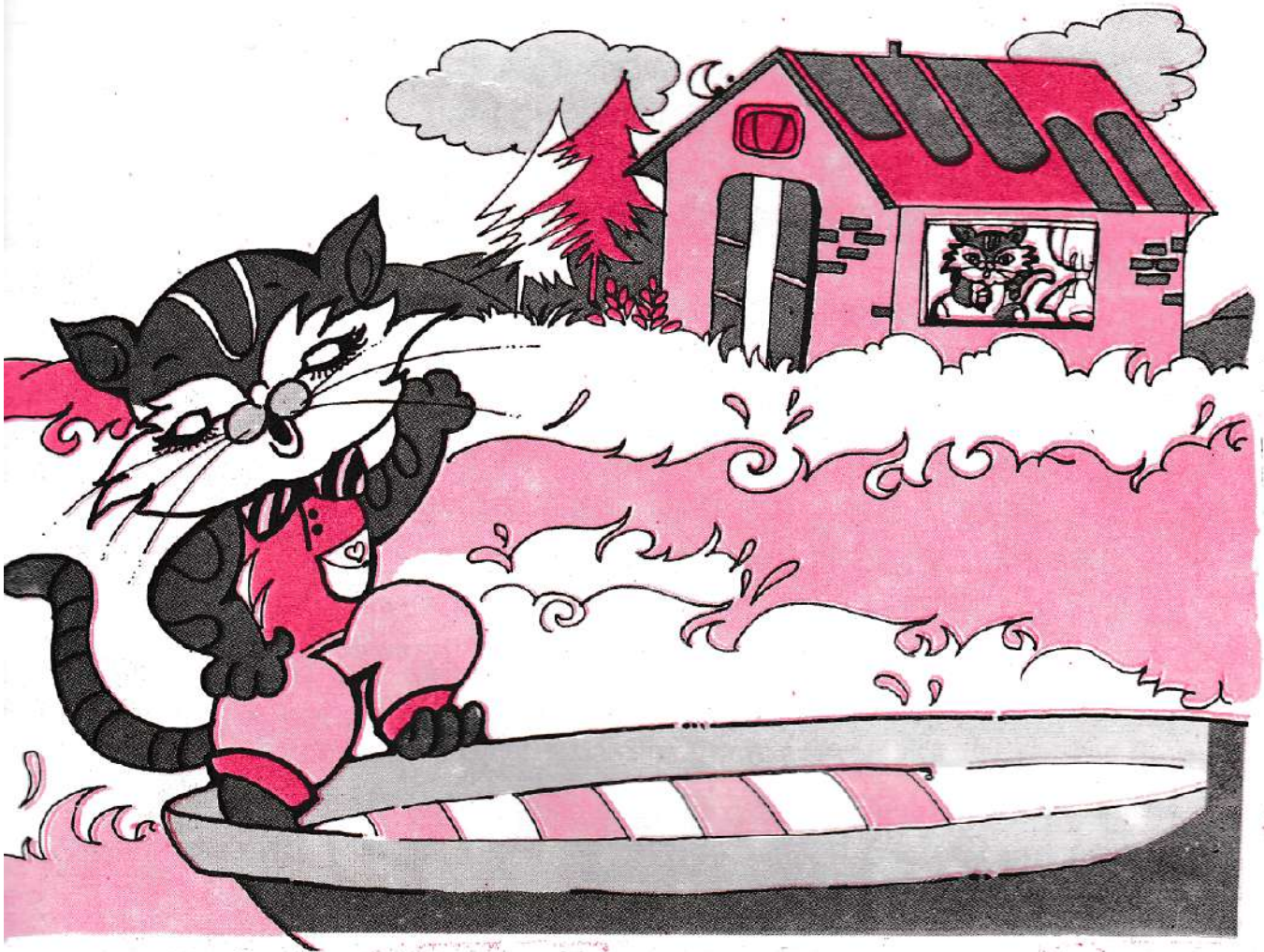
"तो तुम कश्मीरी बिल्ली नहीं हो ?"

यह सुनकर सफ़ेद बिलौटे को हँसी आ गयी। वह पपाया की तरफ़ घूरकर सीधा देखने लगा। इससे पपाया शरमाकर उसके सफ़ेद पंजों की तरफ़ देखने लगी।

"सिर्फ़ गर्मियों में। दरअसल मैं पर्शियन खानदान का हूँ। कुछ ऐसे मुग़ल थे, जिन्होंने कश्मीर जीत लिया था। इसलिये तुम कह सकती हो कि मैं कश्मीरी हूँ।" उसने बड़े गर्व से समझाया, "यह जगह गर्मियों में रहने के लिए बुरी नहीं है। मुझे दोपहर के खाने के लिये ताज़ी ट्राउट मछली मिलती है और कभी-कभी भुनी मछलियाँ, रात के खाने में। कश्मीरी खाना तो बड़ा मज़ेदार होता है। क्या तुम ऐसा नहीं सोचती ?"

"जी ..." पपाया ने लम्बी साँस खींचते हुए कहा, "हाँ, बहुत मज़ेदार होता है।"

"पिछले कुछ हफ़्तों में हम लोग नगीन झील पर रह रहे थे। यहाँ से कहीं सुन्दर, पर वह बहुत सुनसान जगह है। इसलिए कुछ चहल-पहल के लिए हम यहाँ

आ गये हैं। बाद में बर्फ़ देखने के लिए शायद हम गुलमर्ग भी जायेंगे।''

''मैंने बर्फ़ कभी नहीं देखी है।'' पपाया ने मान लिया, ''क्या वह सुन्दर होती है ?''

''बुरी नहीं,'' सफ़ेद बिल्ली ने कहा, ''शायद ये लोग ट्राउट मछली पकड़ने के लिए पहलगाम तक जायें। वहाँ मुझे बहुत अच्छा लगता है। क्या तुम कहीं नहीं जा रही हो ?''

पपाया ने अपना सिर हिला दिया और कहा, ''मुझे पक्का नहीं मालूम।''

अब तक उसे डल झील ही बहुत अच्छी लग रही थी, लेकिन अब अचानक उसे लगा कि कश्मीर में तो इससे भी ज़्यादा बहुत कुछ देखने के लिए है।

''क्या तुम्हें यहाँ अच्छा नहीं लगा ?'' उसने डरते-डरते पूछा।

बिलौटे ने झील पर एक निगाह डाली, ''यहाँ बहुत कारोबारी लोग हैं।'' वह भिनभिनाया, ''ज़रा उनको देखो, इधर-उधर अपना सामान नाव की तरफ़ ले जाते लोगों को। श्रीनगर में सबसे अच्छी जगह है, यहाँ का शालीमार और निशात बाग़। क्या तुम्हें मालूम है इन्हें मुग़ल राजाओं ने बनाया था ? चिनार के पेड़ों के बीच फ़व्वारे तो और भी सुन्दर लगते हैं। क्या तुम वहाँ नहीं गयी ?''

''अभी नहीं'', पपाया अपनी मामूली-सी ज़िन्दगी पर बड़बड़ायी।

''अच्छा'', बोर होते हुए बिलौटे ने कहा, ''मैं सोचता हूँ कि अब मैं नीचे जाकर देखूँ कि नौकरों ने मेरा कमरा तैयार कर दिया है या नहीं ! हमें उन पर निगाह रखनी पड़ती है।''

और वह अपना पंजा नचाता और हवा में शान से अपनी पूँछ लहराता हुआ सीढ़ी की तरफ़ चल पड़ा।

''ओह, मेहरबानी करके'', पपाया चिल्लायी, ''मुझे अपना नाम तो बताते जाओ।''

सफ़ेद बिलौटे ने बड़ी शान ने उसकी तरफ़ देखा—''मेरा नाम ? मेरा नाम है—पाशा सुलेमान अब्दुल रज्ज़ाक़।'' उसने कहा और वह अपनी पूँछ घुमाता हुआ ग़ायब हो गया।

पपाया पाशा की बातों और रोब से इतनी प्रभावित हो गयी कि वह पूरी शाम वहीं खोयी-खोयी-सी बैठी रही, जब तक कि नीरा दौड़कर ऊपर आकर खाने के लिये उसे नीचे नहीं ले गयी।

''अभी तक यहाँ बैठी हो ?'' नीरा चिल्लायी, ''क्या तुम नयी नाव को देख रही हो। बढ़िया है न ? यह एक बहुत बड़ी सफ़ेद केक की तरह लग रही है। इसका नाम 'मुग़ल एम्परर' है। सचमुच यह नाम इसी के लायक़ है। है न ?''

पपाया उसे बताना चाहती थी कि उसमें सचमुच ही एक महाराजा रहता है, और अभी-अभी वह उससे मिली भी थी, लेकिन वह बता नहीं सकी, क्योंकि नीरा उसे गोदी में उठाकर नीचे ले गयी, जहाँ मछली से भरी प्लेट रखी थी। वह ट्राउट मछली नहीं थी, बल्कि झील की ताज़ी झींगा मछली थी, लेकिन आज पपाया को खाने में स्वाद नहीं आ रहा था।

उसी रात को पपाया को एक दूसरा अनोखा अनुभव हुआ। उसका तो जैसे सिर चक्कर खाने लगा। इस झील पर रहने के कारण वह पहले ही बड़ी उतावली में थी। अभी वह बच्चों के कमरे की खिड़की के छज्जे पर ठण्डी हवा के लिए लेटी ही थी कि उसने शिकारे से धीमी, लेकिन रोबीली आवाज़ सुनी। वह शिकारा टापू के किनारे बाँध दिया गया था और वह उसकी खिड़की से कुछ ही दूर था। उसने अपनी आँख खोली और जब तक शिकारे पर एक बेंच पर बैठा एक काला बिलौटा उसे दिखलायी नहीं पड़ा, वह उधर ही घूरती रही।

''मैं तुम्हें वहाँ बैठे देख रहा हूँ''—गिटार के तार-जैसी बहुत ही सुरीली अजनबी आवाज़ आयी, ''मैं सोच रहा था कि कब तुम पानी में गिरोगी ?''

पपाया तनकर बैठ गयी। ''पानी में गिर जाऊँ ?'' पपाया ने गुस्से में कहा, ''मैं क्यों पानी में गिरूँ, मुझे तो हाउसबोट में रहने की आदत है।''

''तुम भी तो मेरी तरह दुनिया का चक्कर लगा चुकी हो।'' उसने बड़े अपनेपन में ज़ोर से कहा और हँसा।

''नहीं-नहीं,'' पपाया ने फ़ौरन उत्तर दिया, ''मुझे बेकार के चक्कर काटने की आदत नहीं।''

''ओह'', काला बिलौटा हँसा और फिर हँसते-हँसते लोट-पोट हो गया, ''तुम तो घर में बैठनेवाली हो, जबकि मैं कभी एक जगह टिक ही नहीं सकता। यहाँ बहुत सूना लगता है।''

''तुम किस परिवार से आये हो, यह तो उसी पर निर्भर है।''—पपाया ने बड़ी शान से किसी भद्र महिला की तरह कहा।

''ओह ! मैं तो सारी दुनिया घूम आया हूँ—न्यूयार्क, शिकागो, पश्चिम के जंगल किनारे बसे शहरों में भी। जब यूरोप गया, रोम में कुछ दिन रुका। चारों तरफ़ बहुत-सी मिलनसार बिल्ले-बिल्लियाँ मिलीं, बिल्कुल मेरी तरह के'' और फिर वह पंजे

ऊपर कर हवा में लोट-पोट-सा हो गया और शैतानी से हँसने लगा, ''पेरिस बुरी जगह नहीं है। वहाँ मैंने एक-दो मित्र बनाये थे। वे सब सचमुच बहुत अच्छे हैं।''

''हूँ,'' पपाया ने उसकी बातों में हाँ में हाँ न मिलाते हुए कहा। उसे उसका व्यवहार अच्छा नहीं लगा। फिर भी वह जानने को उत्सुक थी कि वह कहाँ-कहाँ गया था।

''अरे, भई मैं कहीं एक जगह रह ही नहीं सकता''—काला बिलौटा एकदम शिकारे के किनारे ज़ोर से चिल्लाया, ''मैं और दो बिल्लियों से मिला था। वे एथेन्स के लिए नाव की प्रतीक्षा में थीं। तुम्हें मालूम है ? और जब उन्होंने भारत के बारे में सुना तो मुझे बताया था कि भारत में साँप बहुत हैं और गाँजा भी। लेकिन न तो मैंने यहाँ कभी कोई साँप देखा और न गाँजा या अफ़ीम ही चखा था। इसलिए मैंने इन लोगों के साथ आने का पक्का इरादा कर लिया।''

पपाया ने अपने चारों पंजों को सिकोड़कर, अपनी पूँछ उन पर रख ली। फिर पूछा, ''और अब क्या तुमने कोई साँप देखा और गाँजा चखा ?''

काला बिलौटा खूब ज़ोर से हँसा, ''यह सब तो सरासर गप्प ही होगी। इधर-उधर की बात होगी। है न ?''

पपाया ये सारी बातें सुनने के लिए उतावली हो रही थी कि इतने में 'मुग़ल-एम्परर' नाव का दूसरा दरवाज़ा खुला और एक गुस्से से भरी आवाज़ आयी, ''यह शोर मचाना बन्द करो, एकदम ख़ामोश !''

तभी शिकारे पर एक ठण्डे पानी से भरा मग फेंक दिया गया, जिससे काला बिलौटा टापू पर चला गया और पपाया सोने के कमरे में लुढ़क गयी।

उसके ऊपर काफ़ी ठण्डा पानी गिर गया था। वह दुबारा खिड़की की मुँड़ेर पर अपने को साफ़ करके ही चढ़ सकती थी। काले बिलौटे के ख़तरे से भरे अनुभवों को सुनने के लिए वह बहुत ही उतावली थी, लेकिन अब तो बिलौटा चला गया था। शिकारा ख़ाली था और सब कुछ शान्त। पपाया ने यह सब गुस्सा दिखाते हुए कहा था, लेकिन उसे सच में अफ़सोस हो रहा था। फिर, वह अपने पंजे समेटकर सो गयी।

अगले दिन, जब सुबह वह हाउसबोट की छत पर धूप सेंक रही थी तो पाशा भी पास ही पड़ोस की छत पर धूप सेंक रहा था। पाशा ने कहा, ''मैं पूरी रात सो न सका। सारी रात कोई बिलौटा मेरी खिड़की के बाहर बहुत शोर मचाता रहा। मैंने एक पानीभरी बाल्टी उस पर उँड़ेल दी। तभी वह भागा।''

''अच्छा, तो वह तुम थे।'' पपाया ने हकलाते हुए पूछा।

"क्या तुमने भी वह सब सुना था ?" पाशा ने पूछा और फिर उसकी तरफ़ घूरकर देखते हुए पूछा—"क्या आधी रात तक तुम उससे बात करती रही थी ?"

"ओह-नहीं, नहीं", पपाया ने हकलाते हुए कहा और दूसरी तरफ़ देखने लगी।

वैसे उसे काला बिलौटा अच्छा लगने लगा था। वह बहुत ही मज़ेदार बातें कर रहा था। उसका स्वभाव भी बहुत ही अच्छा था। अब वह अपने क़दम थपथपाता कहीं चला गया था और फिर नहीं दिखायी पड़ा।

पाशा तो पास ही रहता था और उसकी पपाया से खूब दोस्ती भी हो गयी थी। एक दिन तो उसने उसे अपनी नाव पर आने की दावत भी दी थी।

"क्या, तुम सचमुच ऐसा चाहते हो ?" पपाया ने ख़ुशी से कहा, "मैं ज़रूर आऊँगी, लेकिन वहाँ मुझे और लोगों से डर लगता है।"

"दिन के समय नहीं," पाशा ने कहा, "रात के समय आना, जब सब लोग सो रहे हों। मैं तुम्हें सब कुछ दिखा दूँगा। चाँदनी रात होगी और छत पर साथ-साथ बैठकर बातें करने में बड़ा मज़ा आयेगा।"

पपाया सिर नीचा कर अपने पंजों को देखने लगी और अपनी पूँछ चाटने लगी। उसकी समझ मे नहीं आ रहा था कि वह क्या कहे ?

जब तक कि परिवार के सब लोग सो नहीं गये, वह बाट देखती रही। फिर उसने पंजों पर धीरे-धीरे चलकर लकड़ी का तख़्ता लाँघा। टापू की गीली मिट्टी पर भी पंजों से वह आहिस्ता-आहिस्ता गयी, जिससे किसी को आहट न मिले। उसे अपने पर कुछ शर्म आ रही थी, क्योंकि वह इससे पहले कभी भी टॉम के पास नहीं गयी थी। इसलिये जब उसने एक धीमी आवाज़ सुनी तो एकदम सहम गयी, "तुम रात के समय क्या कर रही हो ?"

यह सवाल बत्तख पूछ रही थी, जो विलो पेड़ के नीचे धीरे-धीरे तैर रही थी।

"चुप !" पपाया फुसफुसायी। वह उस समय बत्तख से बात करने के मूड में नहीं थी। "किसी को मत जगाओ।"

"मैं नहीं जगाऊँगी"—बत्तख ने कहा, "तुम चिन्ता न करो, मैं किसी से नहीं कहूँगी।"

पपाया 'मुग़ल-एम्परर' के लकड़ी के तख़्ते पर चढ़ गयी। उसने पाशा को खिड़की पर इन्तज़ार करते हुए पाया। उसने पास आकर देखा कि यह तो और भी बड़ा है। ज़्यादा फरवाला, बड़ा ही खूबसूरत जो दूर से दिखायी नहीं दे रहा था। उसकी चमकीली हरी आँखों को देखकर वह एकदम पिघल गयी और धीरे-धीरे घुरघुराने लगी।

"क्या, मैं तुम्हें सबसे पहले घर दिखाऊँ ?" पाशा ने पूछा, "आओ मेरे साथ।" और उसे एक कमरे से दूसरे कमरे में ले गया। सभी कमरे बहुत ही सुन्दर थे। उसने बुखारे का क़ालीन दिखाया, जिस पर लाल गुलाब का डिजाइन बना था। फिर एक लम्बी डंडीवाला हुक्का, जो मोतियों से जड़ा था। वहाँ दीवारों पर मुग़ल बादशाहों तथा बेगमों की तस्वीरें लगी थीं। बड़े-बड़े फूलदान रखे थे—सुन्दर फूलों से सजे हुए।

पपाया बराबर हाँ-हूँ करती रही, मानो यह सब देखकर उसे बहुत अच्छा लग रहा हो, लेकिन सच तो यह था कि वह पाशा को अपनी सुनहरी आँखों से देख रही थी। उसने अपने जीवन में पहले कभी इतना सुन्दर बिलौटा नहीं देखा था।

आख़िर में, पाशा उसे छत पर ले गया। वहाँ चाँदनी छिटक रही थी। झील भी चमक रही थी। आकाश में सुन्दर रुपहला चाँद चमक रहा था और हाउसबोट की काली परछाईं नीचे पानी में भूत जैसी दिखायी दे रही थी। पोपलर और विलो के पेड़ उस काली रोशनी में एकदम काले लग रहे थे। गुलाबी कमल की खुशबू हवा में फैल रही थी। कभी-कभी एक दो शिकारे उधर से निकल जाते थे।

पपाया के जीवन की वह सबसे सुन्दर रात थी। जब तक साँस रहे, वे दोनों उसी सुन्दर चाँदनी में लेटे रहना चाहते थे। पपाया वहीं से समुद्र में चाँद की परछाईं देखती रहना चाहती थी। पाशा की चमकती आँखों को और उसे वहाँ लेटे हुए भी ! और पाशा उसे गाने भी तो सुना रहा था—

"शालीमार में सैर करते मुझे तुमसे दोस्ती हो गयी।"

अब तुम कहाँ हो ?

तुम्हारी दोस्ती का अब कौन हक़दार हो गया है ?"

पपाया के सुन्दर, छोटे पंजों की तरफ़ झुककर देखते हुए और मस्ती में झूमते हुए, उसने तेज़ आवाज़ में गाना गाया। पपाया खुशी से झूम उठी। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह गाना उस जैसी साधारण भूरी टैबी बिल्ली के लिए गाया जा रहा है। उसका नाम भी कितना अजीब था और दोस्ती से भरा यह गाना, एक कश्मीरी बिल्ला चाँदनी रात में उसके लिये गा रहा था।

पपाया कुछ ही दिन खुश रह सकी, क्योंकि फिर पाशा चला गया। उस रात पपाया रोती रही थी। पाशा ने उसे बताया था कि डल झील उसे बहुत भीड़-भाड़ से भरी और गरम लग रही है और अब वे लोग पहाड़ की तरफ़ ट्राउट मछली पकड़ने जा रहे हैं।

"लेकिन मैं तुम्हारे बिना क्या करूँगी ?" उसने म्याऊँ-म्याऊँ की, "क्या मैं तुम्हें फिर कभी नहीं देख पाऊँगी ?"

"ओह, मेरी प्यारी बिल्ली ! यही तो जिंदगी है," उसने बहुत ही लापरवाही से कहा, "हम लोग तो रात के आने-जानेवाले जहाज़ों की तरह हैं। यहाँ तो बस मिलना और जुदा होना है। तुम जानती ही हो।" लेकिन इससे पपाया की बेसब्री कम नहीं हुई।

अगली सुबह डल झील मोती की तरह चमक रही थी और चारों ओर सन्नाटा था। केवल कुछ सँकरे और लम्बे शिकारों में मछुआरे निकल पड़े थे। उन लोगों ने 'मुग़ल एम्परर' से उतारकर अपना सामान गद्दीदार शिकारों पर लादा और चल पड़े। पपाया अपने छज्जे पर बैठी-बैठी दुखी हो रही थी। उसी समय एक औरत बालों में फूल लगाये और ढेर सारी अँगूठियाँ पहने आयी और पाशा को अपनी गोदी में उठाकर धीरे-से शिकारे में उतर गयी। उसने पाशा को मोरपंखी रंग की गद्दियों के सहारे अपनी रेशमी साड़ी पर लिटा दिया। उस समय वह टॉम कोई बिलौटा नहीं, बल्कि एक

सजावटी खिलौना लग रहा था। इस झील की हाउसबोट पर उसने अपनी कई रातें दोस्त पपाया से बातें करते बितायी थीं।

पाशा ने पपाया पर आखिरी नज़र डाली और पपाया को लगा कि वह भी उससे रोती हुई-सी आवाज़ में कह रहा है, "गुड बाइ पपाया, गुड बाइ !" लेकिन तभी नाव चलानेवालों ने अपनी पतवार पानी में डाल दी और वे पानी छपकाते आगे बढ़ गये।

पपाया को यह सब काफ़ी अखर रहा था ? उसी सुबह, नीरा ने पपाया से कहा, "ओफ़ पपाया, अब हमारी छुट्टी क़रीब-क़रीब ख़त्म हो गयी है। अब हम जल्दी ही गरम मैदानी इलाकों में चले जायेंगे।"

पपाया की सुनहरी आँखें फटी-की-फटी रह गयीं। उसे तो समय का ध्यान ही नहीं रहा था।

"देखो माँ, यह कितनी परेशान लग रही है। जो कुछ मैंने कहा, वह समझ गयी है," नीरा ने कहा।

बात सही थी। पपाया को सुन्दर परियों के देश-जैसी जगह छोड़ते हुए बड़ा दुःख हो रहा था। उसे यह सोच-सोचकर बुरा लग रहा था; साथ ही, उसे एक और बात परेशान कर रही थी। उसे अभी-अभी याद आया कि उसने छोटी बत्तख से कोई वायदा किया था। वह पाशा से बात करते हुए यह भूल ही गयी थी। पाशा ने उसे बहुत ही खुश और बहलाये रखा था। अब उसके पास बहुत थोड़ा समय था, जिसमें कि बत्तख से जो कुछ उसने कहा था, वह पूरा करके दिखा सकती थी।

वह नीरा की गोद से कूद पड़ी। फिर लकड़ी के तख़्ते पर नीरा के कन्धे के ऊपर झाँकती जल्दी-जल्दी म्याऊँ-म्याऊँ करती आगे बढ़ गयी।

परिवार के लोग अभी सुबह का नाश्ता ही कर रहे थे, चेरी खा रहे थे, मीठे रसीले आडुओं पर मुँह मार रहे थे। उन सबने हैरानी से पपाया की तरफ़ देखा।

"वह चाहती है कि मैं उसके साथ-साथ जाऊँ।" नीरा ने उठकर लकड़ी के तख़्ते पर जाते हुए कहा।

पपाया उसके पास चली आयी—घबरायी आवाज़ में म्याऊँ-म्याऊँ करते हुए। यह देखकर माँ ने कहा, "वह यह दिखा रही है जैसे कि वह चाहती है कि हम उसके बच्चों को देखें। लेकिन उसके तो बच्चे हैं ही नहीं।"

नीरा, उसके पीछे टापू लाँघ गयी। पपाया गीली मिट्टी को लाँघकर छोटी बत्तख के पास चली गयी। बत्तख अभी तक वहीं चक्कर लगाती पानी में तैर रही थी। उसके पैर छोटी रस्सी से बँधे थे। पपाया की समझ में नहीं आ रहा था कि वह नीरा को

ऐसे बताये कि इस तरह जंगली बत्तख को बाँधकर क़ैद में रखना कितना ग़लत और मुश्किल है।

अब वह माथे पर त्योरी डालकर बैठी-बैठी सोच रही थी। नीरा पानी और घास बत्तख के मुँह में डाल-डालकर उसके साथ खेल रही थी। जोहरा ने समस्या का हल ढूँढ़ निकाला और नीरा को वह दिखा दिया, जो पपाया चाहती थी।

जोहरा कुकबोट में बैठी छोटी बच्ची को चुप करने का प्रयत्न कर रही थी, जबकि उसकी माँ परिवार के लोगों के लिए कॉफी बना रही थी। लेकिन जब उसने नीरा को देखा तो वह खिड़की के पास आ गयी और उसकी तरफ़ घूरने लगी। ज़ोहरा ने हाथ बढ़ाकर बत्तख की छोटी रस्सी को खींचा। बत्तख डर के मारे चिल्लायी और पंख फड़फड़ाने लगी। वह दूर भागना चाहती थी। ज़ोहरा ने रस्सी एकदम ऊपर खींच ली। बत्तख उससे लटक गयी। ज़ोहरा यह सब नीरा को अपनी शान दिखाने के लिए ही कर रही थी।

नीरा को बड़ा गुस्सा आया और वह चिल्लाने लगी, "उसे नीचे छोड़ दो, उसे फिर से पानी में छोड़ दो, उस बेचारी बत्तख को जाने दो। तुम्हें कैसा लगे, अगर तुम्हें बाँधकर इसी तरह उल्टा लटका दिया जाये ?"

ज़ोहरा खिलखिलाकर हँसी। उसने बत्तख को नहीं छोड़ा। बत्तख अब भी उसी तरह लटकी हुई थी, लेकिन क्वैक-क्वैक नहीं कर रही थी। वह अपने पंख इतनी तेज़ी से फड़फड़ा रही थी कि लगा कोई पंख उखड़ जायेगा। ज़ोहरा समझ रही थी कि नीरा क्या चाहती है ; भले ही दोनों कुछ बोल नहीं रहे थे। उसने बड़ी चतुराई से नीरा की तरफ़ इशारा किया।

नीरा ने भी पूछा—"तुम किसकी तरफ़ इशारा कर रही हो ?"

ज़ोहरा ने तब अपने गन्दे जूड़े की तरफ़ देखा, जो कभी धुला नहीं था। उसने लाल धागे की तरफ़ देखा ; फिर उसने नीरा के लाल रिबनों की तरफ़ इशारा किया।

"ओह", नीरा ने समझते हुए कहा—"तुम्हें मेरे रिबन चाहिये। अगर मैं तुम्हें ये दे दूँ, तो तुम बत्तख को छोड़ दोगी ?"

ज़ोहरा ने अपना सिर हिलाया, उसकी आँखें चमकने लगीं।

नीरा ने अपने बालों से गुलाबी रिबन निकाला और खुली खिड़की की तरफ़ फेंक दिया। जोहरा ने बत्तख की रस्सी छोड़ दी और रिबनों को ऐसे ले लिया, जैसे वही उसकी सबसे प्यारी चीज़ हो। वह हँसने लगी और अपनी माँ से बातें करने लगी।

लेकिन तभी नीरा चिल्लायी—"अब तुम बत्तख तो छोड़ दो।" वह किनारे की ओर झुककर रस्सी तक पहुँचकर उसे काटना चाहती थी, तभी बत्तख फड़फड़ाने लगी

और नीरा तथा पपाया पानी से भीग गयीं।

"ज़ोहरा",—नीरा चिल्लायी। इधर छोटी-सी लड़की ने खिड़की से झाँका और कहा, "अब बत्तख को जाने दो। रस्सी खोल दो।"

ज़ोहरा की समझ में आ गया। अब उसने नीरा के प्लास्टिक के क्लिपों की तरफ़ देखा।

"तुम्हें मेरे क्लिप चाहिये ? तब तुम बत्तख को छोड़ दोगी न !" नीरा ने पूछा। ज़ोहरा ने सिर हिलाया तो नीरा ने अपने बालों में से पिन निकालकर खिड़की में फेंक दिये। आख़िरकार ज़ोहरा खिड़की पर झुकी। उसने वह रस्सी काट दी, जिससे बत्तख बँधी थी। शुरू में तो बत्तख यह समझ ही नहीं सकी कि वह आज़ाद हो गयी है। अब भी वह चक्कर काट रही थी जो बड़ा होता जा रहा था। नीरा ने बत्तख पर पानी में दूर जंगली खर पतवार फेंकी, जिससे वह पंख फड़फड़ाते हुए आगे बढ़ गयी। इस बड़ी झील में आज़ाद अब वह कई तरह की चमकती मछलियों के बीच, दूर विलो की छाँववाले टापू और लिली के फूलों के बीच जा सकती थी।

नीरा की माँ ने ज़ोहरा की कोई बुराई नहीं सुनी, बल्कि उसे समझाया कि ज़ोहरा बहुत ग़रीब लड़की है। उसने नीरा की तरह बढ़िया चीज़ें कभी नहीं देखीं है। नीरा को याद रखना चाहिए। कि ज़ोहरा गरीब लड़की और वह बत्तख के मामले में इतनी निर्दयी न बने।

कुछ दिनों बाद, एक धुँधली दोपहर को उनका सामान बँध गया और नीचे शिकारे पर लाद दिया गया। वहाँ से, उन्हें किनारे पर रुकी टैक्सी से हवाई अड्डे जाना था। परिवार के लोग उस शिकारे पर बैठे, जिसे अली चला रहा था। दूसरे शिकारे पर अखरोटों से भरी टोकरी, ऊनी क़ालीन और चाँदी के सामान लदे थे।

नीरा के हाथ में वही टोकरी थी, जिसमें सफ़र में जाने के लिए पपाया बन्द थी। जब उसने अपने को टोकरी को बँधते हुए देखा तो उसने गुस्से में म्याऊँ-म्याऊँ की। लेकिन बाद में चुपचाप बैठ गयी और झील के शान्त पानी को सरसराते हुए देखती रही।

नीरा ने उसे मीठी-मीठी बातों से समझाना चाहा। उसे मालूम नहीं था कि पपाया को उस जगह को छोड़ते हुए कितनी तकलीफ़ हो रही थी। "पपाया, चिन्ता न करो", उसने कहा, "कुछ ही देर में तुम घर पहुँच जाओगी। वहाँ हम तुम्हें बाग़ से लाया बहुत बड़ा, पका और मीठा पपीता खाने को देंगे। ठीक है न !"

बिल्ली हाउसबोट पर पपीता खाने की बेहद शौकीन एक बिल्ली की दिलचस्प कहानी है। तभी नीरेन और नीरा ने इसका नाम रख दिया है—पपाया यानी पपीता।

गर्मी की छुट्टियों में परिवार के सभी सदस्य कश्मीर की सैर को जाते हैं। पपाया भी हवाई जहाज़ पर उनके साथ जाती है—बंद टोकरी में हिलती—डुलती, डरती—कँपती। वहाँ सभी डल झील में तैरते 'हाउस बोट' में रहते हैं। चारों तरफ़ पानी—ही—पानी देखकर पपाया डर जाती है लेकिन बाद में उसे वहाँ बड़ा मज़ा आने लगता है। कश्मीर के खूबसूरत मौसम, फल—फूल, पेड़—पहाड़ और सबसे बढ़कर डल झील की रौनक़ और ख़ामोसी में उसका मन नाचने लगता है। झील में तैरती मछलियाँ देखकर पपाया के मुँह में पानी भर आता है। धीरे—धीरे बहुतों से उसकी दोस्ती हो जाती है। इधर छुट्टी समाप्त होने को है—और पपाया को वापस लौटना है।

अब पपाया क्या करे? क्या उसका सैलानी मन कश्मीर छोड़ने को तैयार है? सैलानी बच्चों के लिए **अनिता देसाई** की बेहद दिलचस्प कहानी।

ISBN 81-7201-492-9
9 798172 014925
www.sahitya-akademi.gov.in

साहित्य अकादेमी

मूल्य : पच्चीस रुपये